"ॐ" “पिताश्री” शिवबाबा याद है ?

22-06-2023 शिवबाबा की वाणी

"मीठे बच्चे...संगठन में एक दो के सहयोगी खड़े होकर चलना। ये बाप के बच्चों में कला है, पर मर्ज रूप में है, अभी इमर्ज नहीं हुई है... तो इसको इमर्ज करो।"

अच्छा! आज बापदादा अपने अति प्यारे, मीठे, नन्हे -मुन्ने बच्चों से मिलने आएं हैं। नन्हे-मुन्ने बच्चे माना क्या? पूरे विश्व का भविष्य, पूरे संसार का भविष्य। आज बाबा भविष्य से मिलने आएं हैं। हर एक बच्चा अपने आप में महान है। आज बाप ने देखा... सभी बच्चों ने तितली को देखा कैसे उड़ती है?कैसे उड़ती है? आज बाप सभी आत्मा रूपी तितलियों को देख रहें हैं। इतना स्नेह, इतना प्यार, बापको सभी बच्चों पर आ रहा है। सभी की बुद्धि में होंगा, कोई भी... अगर बाबा बच्चों से पूछे की आप सब कौनसी विश (इच्छा) मांगने वाले हैं? तो सभी क्या कहेंगे? किनकी क्या-क्या विश (इच्छा) है? मेजोरिटी कहेंगे पढ़ाई में फर्स्ट नंबर आने चाहिए। और ये ही बड़ों की भी बात है। अगर पूछे कि बच्चे क्या बनने वाले हैं? तो कहेंगे- बाबा पढ़ाई में नंबरवन आना है। याद में नंबरवन आना है। नंबरवन आने की विधि, पेपर में नंबर वन पास होने की विधि क्या है? सारे सब्जेक्ट को समझना, हर एक सब्जेक्ट को समझ करके पढ़ाई पढ़ना, हर सब्जेक्ट को अच्छी रीति धारण करना- ये फर्स्ट नंबर में आने वालों की निशानी है।

जैसे सभी टीचर्स अपने बच्चों को क्या सिखाते हैं? कॉमन सी बात क्या सिखाते हैं? जो सभी स्कूलों में पढ़ाई जाती है। क्या टीचर बताएंगे, क्या सिखातें हैं बच्चों को? कभी किसी से झगड़ना नहीं है, लड़ना नहीं है, आपस में बहुत प्यार से रहना है, एक दूसरे का सहयोगी बनकर चलना है। तो क्या बच्चे इस चीज पे विशेष ध्यान देते हैं? देते हैं? कौन देते हैं? आपस में कौन झगड़ा नहीं करते? तो हर एक बच्चा आज विशेष ध्यान रखना- जब आप बड़े हो जाएंगे, तो आपको बहुत याद आएंगा कि हमने किन के साथ मिलन मनाया था। आज छोटे हैं ना, तो समझ में कम आएंगा। भल आप नहीं पहचानो पर बाप ने तो पहचाना है ना। तो हर एक बच्चा अपने आप को देखना, कि मैं कैसा हूँ? मेरी पढ़ाई कैसी है? ये जो पढ़ाई पढ़ते हैं इस दुनिया के लिए, और जरूरी है, पर जो रियल पढ़ाई

है, जो कई जन्मों तक साथ चलने वाली पढ़ाई है, ये बाप पढ़ाते हैं, जो हमेशा साथ में रहेंगी। दोनों पढ़ाई पे ध्यान देना है। पहली पढ़ाई आपकी जो इस संसार की नॉलेज है। दूसरी पढ़ाई परमात्मा की- जो इस संसार के बाहर वाली नॉलेज है।

अच्छा सभी बच्चों को, प्यारे बच्चों को, मीठे बच्चों को बापदादा का याद प्यार। अच्छा अब बड़ा संगठन- आपका पुरुषार्थ क्या है? दिल में प्यार है? है? नहीं है? है या नहीं है? दिल में प्यार है? किसके लिए प्यार है? किसके लिए? बाबा के लिए है? पक्का है? है? सिर्फ बाबा के लिए काफी है? परिवार के लिए भी प्यार जरूरी है। बाप के लिए प्यार है तो परमधाम में ही बैठे रहेंगे। पर अगर परिवार के लिए भी प्यार है, तो संगठन की शक्ति को जानते हैं ना। संगठन की ताकत क्या है मालूम है? मालूम है? अगर सौ या एक हजार बच्चे बैठकर एक संकल्प करें... सिर्फ एक संकल्प, वो संकल्प सिद्ध होता है। ये संगठन की ताकत है। अगर हम संगठन के साथ नहीं चल सकते, संगठन के साथ अपने आपको नहीं ढाल सकते, तो चाहे आप अपनी पूरी ताकत लगा लेवे, कुछ भी परिवर्तन नहीं कर सकते। चाहे आप ये सोचेंगे नहीं मैं बहुत बड़ा, महान हूँ, बहुत श्रेष्ठ हूँ, बहुत विद्वान हूँ, वो कहीं काम नहीं आएगा। अगर संगठन की ताकत नहीं है तो।

"संगठन" का अर्थ क्या है? जो संघ इकट्ठा होवे और कितना भी बड़ा असंभव कार्य हो, उसको भी संभव करके दिखावे, ये संगठन की ताकत है, ये संगठन की पावर है। समझ में आया? मानो इस पूरे एरिया में कचरा है, और 100 बच्चे मिलकर एक संकल्प में, ये संकल्प धारण करे, कि मुझे इसकी पूरी तरह से सफाई करनी है, पूरा क्लीन करना है। तो क्या होंगा? 10 मिनिट में पूरा साफ! अगर एक व्यक्ति संकल्प करें कि नहीं मैं इसको कर सकता हूँ, मुझे किसीकी आवश्यकता नहीं है, मैं अकेला काफी हूँ करने के लिए। तो क्या उस कार्य को करेगा? अच्छा चलो करेगा भी... पर समय कितना लगेंगा? थकान लगेंगी, समय जाएगा, मन की ताकत लगेंगी। तो सबको समझ में आया? हर एक आत्मा का अपना अपनी विशेषता है। तो संगठन में एक दो के सहयोगी खड़े होकर चलना। ये बाप के बच्चों में कला है, पर मर्ज रूप में है। अभी इमर्ज नहीं हुई है, तो इसको इमर्ज करो ।

अच्छा बच्चों आज तो ब्रह्माबाप सभी से मिलकर जाएंगे। खुशी की लहर! प्यार की लहर! तो कौन है? ब्रह्मा बाबा है ना? सोचो इतने समय तक सृष्टि का संचालनकर्ता, आदि पिता ब्रह्माबाप है। उनको मालूम है अपने बच्चों को कैसे चलाना है।

अच्छा आप सभी बच्चों को बापदादा का दिल वा जान से याद प्यार, और ड्रामा कल्याणकारी है। एक एक सेकंड कल्याणकारी है। जो हो रहा है बहुत बड़ा कल्याण समाया है। जो होने वाला है उसमें भी कल्याण है।कल्याणकारी बाप के बच्चे सदा कल्याणकारी होंगे।

अच्छा बच्चों फिर मिलेंगे...

(फिर बच्चों द्वारा बाबा को गुलदस्ता भेंट किया गया)
ये तो नहीं सोच रहे... कुछ भी व्यर्थ संकल्प नहीं। बाप अगर साथ है तो कोई भी कार्य असंभव हो ही नहीं सकता। बहुत अच्छा है, बहुत अच्छा कर रहे हैं... आगे भी बहुत अच्छा करना है। कोई भी पेपर आवे - "मेरा बाबा मेरे साथ है, तो कोई ऐसा पेपर नहीं जिसमें मैं फैल हो जाऊँ"! ठीक है? अच्छा, बहुत अच्छी सेवा की है। बहुत अच्छा किया है।

अच्छा...